टिप्पणी

5

मुद्रित माध्यम – एक परिचय

इससे पहले के मॉड्यूल में आपने जन माध्यम के विभिन्न प्रकारों के विषय में जाना। मुद्रित माध्यम जन माध्यमों के सबसे प्रारम्भिक और आधारभूत माध्यमों में से एक हैं। इसमें समाचारपत्र, साप्ताहिक, पत्रिकाएँ, मासिक तथा मुद्रित पत्रों के अन्य रूप सम्मिलित हैं।

जन माध्यम के अध्ययन में मुद्रित माध्यम की आधारभूत समझ जरूरी है। सूचनाएँ उपलब्ध कराने तथा ज्ञान के हस्तांतरण में मुद्रित माध्यम का योगदान उल्लेखनीय है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के आगमन के बावजूद मुद्रित माध्यम ने प्रासंगिकता तथा आकर्षण खोया नहीं है। मुद्रित माध्यम में यह सुविधा है कि इसका प्रभाव पाठक के मस्तिष्क पर होता है। अधिक गहन समाचारों तथा विश्लेषण के साथ दीर्घकालीन होता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित कर सकेंगे:

- मुद्रित माध्यम के विभिन्न रूपों की पहचान;
- प्रारम्भिक मुद्रण के इतिहास पर चर्चा;
- भारत में समाचारपत्रों के उद्भव का वर्णन;
- मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में विभेद।

5.1 समाचारपत्र

सामान्यतः मुद्रित माध्यम का सम्बन्ध समाचारपत्र से ही होता है। समाचारपत्र समाचार, संवाद तथा लेखों का संकलन, सम्पादन तथा मुद्रण करते हैं। यह सायंकाल भी प्रकाशित होते हैं जिन्हें सांध्य दैनिक कहते हैं।

टिप्पणी

लोग समाचारपत्र क्यों पढ़ते हैं? वे अनेक कारणों से समाचारपत्र पढ़ते हैं। आइए हम कुछ उदाहरण लें।

कल शहर जाते समय आपने एक दुर्घटना देखी होगी जिसमें दो बसों की टक्कर हो गयी। मात्र यह देखकर आप समझ सके होंगे कि इस दुर्घटना में अनेक लोग हताहत हुए होंगे। आप अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गये होंगे, फिर इस दुर्घटना को भूल गये होंगे। आज सुबह ही आपको यह फिर याद आया। आप इसके विषय में जानने को उत्सुक हुये। आप जानना चाहते थे कि कितने यात्रियों की मृत्यु हुई थी या कितने घायल हुए।

इस विवरण को आप कहाँ से प्राप्त करेंगे?

जाहिर है, एक समाचारपत्र में। अतः आप अखबार उठाएँगे और दुर्घटना के विषय में सब कुछ पढ़ेंगे।

चित्र 5.1: रेल दुर्घटना का समाचार

रामू और रवि एक फिल्म देखने की सोच रहे थे। दोनों को अपने अभिभावकों से जेब खर्च तथा फिल्म देखने की इजाजत मिल गयी। रामू ने रवि से पूछा कि, "क्या शहर के सिनेमाघरों में चल रही फिल्मों के नाम की जानकारी उसे है।" रवि को भी इसकी कोई निश्चित जानकारी नहीं थी। अब उन्होंने समाचारपत्र उठाया। अखबार में उन्हें शहर के विभिन्न सिनेमाघरों में दिखायी जा रही फिल्मों का सभी विवरण मिल गया।

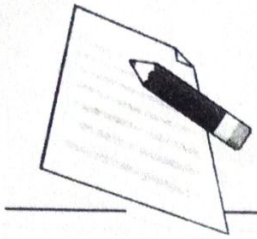

टिप्पणी

CINEMA IN CITY

BLOOD IN THE ROSE GARDEN
ROYAL- 3.PM, 7.PM, 9.PM

GRANDFATHER
SCREEN- 2.PM, 6.PM, 9PM

MY SISTER
PALLAVI-2.PM, 7.PM, 9.PM

ROYAL : BLOOD IN THE ROSE GARDEN
3.00 PM, 7.00 PM , 9.00 PM

KING : THE MAN
3.00 PM, 7.00 PM

SCREEN : GRANDFATHER
2.00 PM, 6.00 PM, 9.00 PM

CORNATION : MY HORIZON
3.00 PM, 7.00 PM

MEGADHOODH : BRAVE MOTHER
2.00 PM, 8.00 PM

VISION : SHIP OF DISERT
3.00 PM, 7.00 PM

PALLAVI : MY SISTER
2.00 PM, 7.00PM, 9.00 PM

MASTER : HINDUSTHAN
3.00PM, 6.PM, 9 PM

AKKAD : TARGET & RESCUE
3.00PM, 7.00PM, 9.00PM

चित्र 5.2: सिनेमा थियेटर सूची

आपने समाचारपत्रों में ऐसे स्तम्भ देखे होंगे। यह 'मनोरंजन' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित होते हैं।

राजू भोपाल का रहने वाला है। वह अपने चाचा के पास दिल्ली जाना चाहता था। वह सप्ताह के दिनों में व्यस्त रहता था लेकिन सप्ताहान्त में उसके पास फुरसत रहती थी। टिकट खरीदने से पहले उसने रेलगाड़ियों का समय जानना चाहा। वह देखता था कि स्थानीय समाचारपत्रों में ट्रेन की समय सारणी के विषय में एक स्तम्भ रहता था। अतः उसने अखबार उठाया और यह तय कर लिया कि किस ट्रेन के लिए वह टिकट आरक्षित कराए।

टिप्पणी

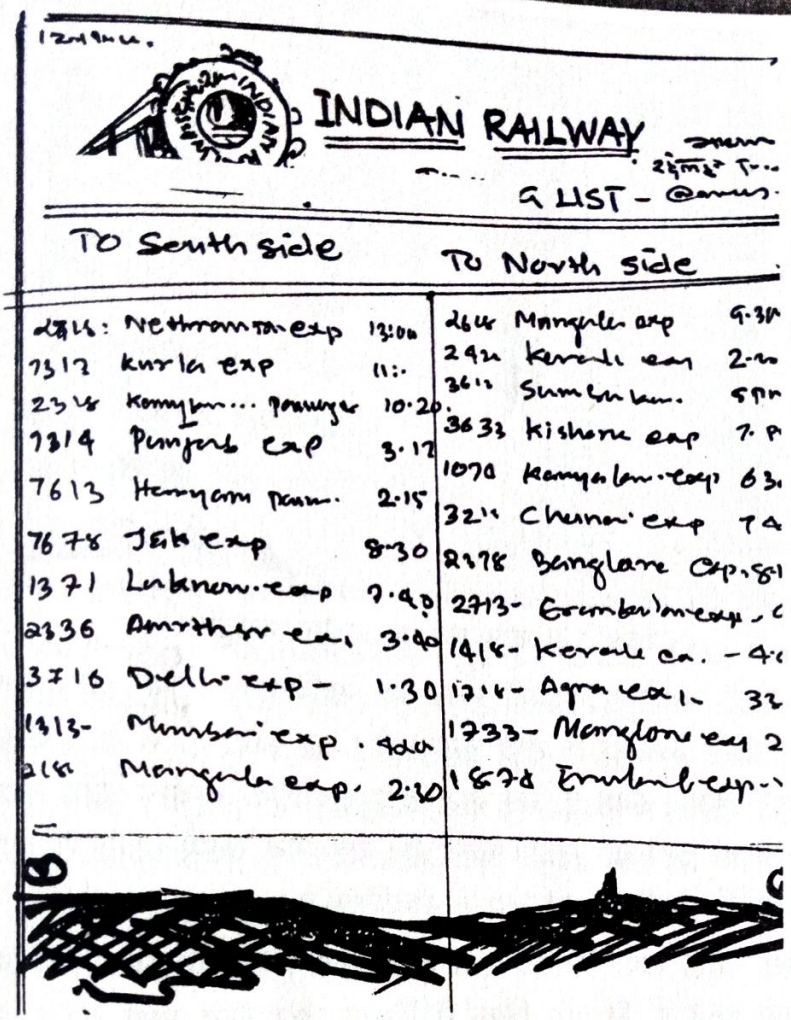

चित्र 5.3: रेलवे समय सारणी

आपने भी अखबारों में ऐसे स्तम्भ देखे होंगे। उसमें ऐसी सूचनाएँ छपती हैं। अतः आप समाचारपत्र सूचना के लिए भी पढ़ते हैं।

इस तरह समाचारपत्र हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम समाचारपत्र पढ़ते हैं:

- समाचार के लिए
- मनोरंजन के लिए
- सूचना के लिए

5.2 मुद्रण का इतिहास

क्या आपने ताड़पत्र देखा है? एक समय था जब लोग ताड़पत्र पर लिखते थे। ऐसा कागज की खोज से पहले होता था। हमारे राष्ट्रीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय, दिल्ली में ताड़पत्र पर लिखित कुछ पुरानी पाण्डुलिपियाँ संरक्षित हैं।

टिप्पणी

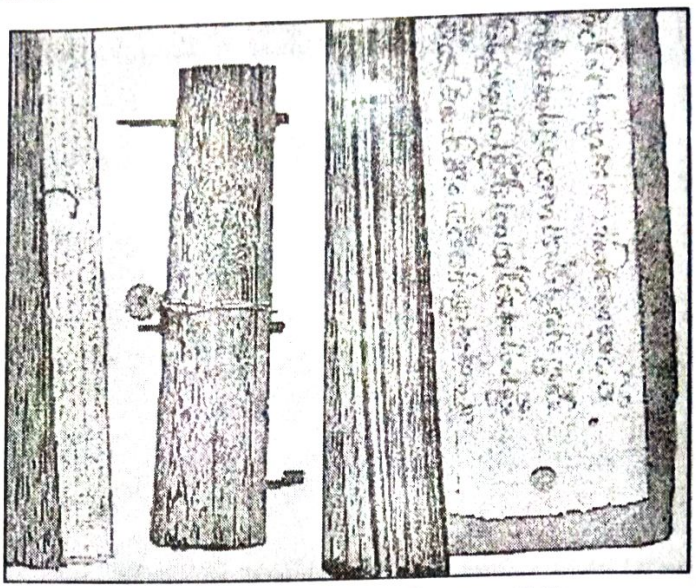

चित्र 5.4: ताड़ पत्र पर प्राचीन पाण्डुलिपि

चीनियों ने सबसे पहले मुद्रण की कला का आविष्कार किया था। उन्होंने अक्षरों की छपाई के लिए लकड़ी के ठप्पे बनाये थे। यह 600 ई. में तांग वंश के शासन के दौरान शुरू हुआ। 648 ई. का बौद्ध ग्रंथ सर्वाधिक प्राचीन ज्ञात तथा अब तक मौजूद लकड़ी के ठप्पे का मुद्रण कार्य है। यह अब जापान की राजधानी टोक्यो के सुलेखन (कैलिग्राफी) संग्रहालय में प्रदर्शित है।

चीन में सबसे पहले छपी किताब एक बौद्ध लेखन था जिसका नाम 'हीरक सूत्र' था तथा जिसे 868 ई. में वांग चिक ने लिखा था। बौद्ध ग्रंथों की 1377 में छपी कुछ प्रतियाँ चीन के एक संग्रहालय में संरक्षित हैं।

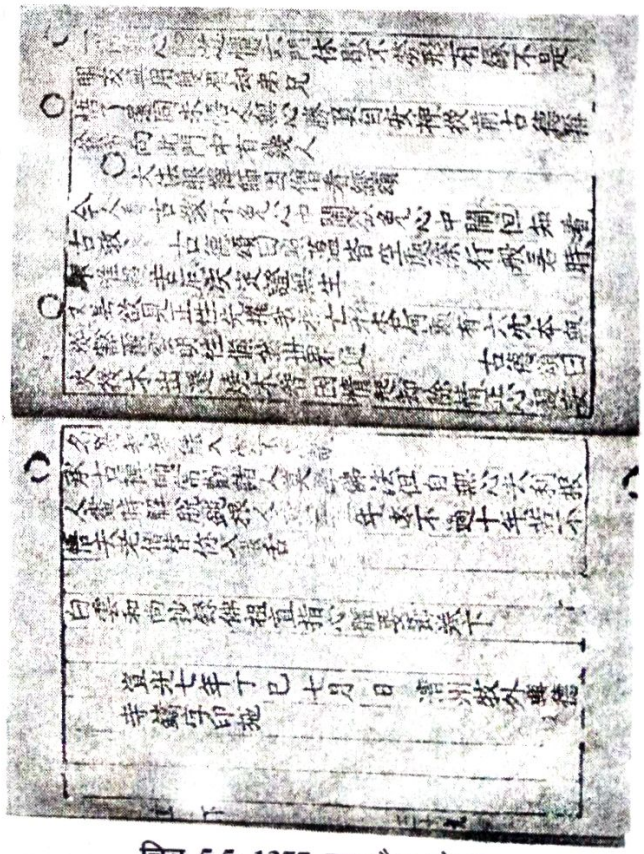

चित्र 5.5: 1377 का बौद्ध लेखन

टिप्पणी

क्या आप कागज के बिना दुनिया की कल्पना कर सकते हैं? आज तो कागज हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। हम सुबह अखबार पढ़ते हैं, कागज के नोट बुक पर लिखते हैं, कागज पर पत्र भेजते हैं, कोई सामान लाने के लिये कागज के थैले का उपयोग करते हैं। आपने पूर्व के पाठ में सीखा कि यह कागज कैसे बना है। यद्यपि एक मिस्र निवासी ने 3500 ई.पू. में कागज बना लिया था, फिर भी यह 11वीं शताब्दी में ही यूरोप पहुँच सका। यूरोप का पहला कागज कारखाना स्पेन में 1120 में स्थापित हुआ।

ठप्पे की छपाई वर्ष 1300 तक यूरोप पहुँची। ऐसा माना जाता है कि जर्मनी के जोहानस गुटनेबर्ग ने 1439 के लगभग मुद्रण तकनीकी विकसित की। गुटेनबर्ग ने छपाई के लिये तेल आधारित स्याही का आविष्कार भी किया। उसने 1450 में बाइबिल छापा। यह लैटिन भाषा में था तथा इसमें 1282 पृष्ठ थे। पुस्तक के लिये उसने उठाऊ ब्लॉक (ठप्पे) का प्रयोग किया। मुद्रण तकनीकी 1556 में भारत आयी। हमारे देश में यह तकनीकी एक यहूदी पादरी ले आया। भारत में छापी गयी पहली किताब पुराने गोवा में पुर्तगाली भाषा में थी। यह सन्त फ्रांसिस जेवियर द्वारा लिखित 'डाक्ट्रिना क्रिस्टा' थी। मुद्रण के आविष्कार से जनसंचार में क्रांति आ गयी। बड़ी संख्या में किताबें लिखी जाती हैं और अनेक देशों में वितरित की जाती हैं। मानवता के इतिहास में इतना प्रभावशाली आविष्कार और कोई नहीं है।

Fol.1

DOCTRINA Christiana. PRANVI clisà.

TOdo fiel Christiano — es muy obligado — a tener deuocion — de todo coraçon — con la Santa Cruz, — de Christo nuestra luz, — pues en ella — quiso morir — por nos redimir — de nuestro pecado, — y del enemigo malo; — y por tanto — te has de acostumbrar — a signar, y santiguar, — haziendo tres Cruzes, — la primera en la frente, — porque nos libre Dios — de los malos pensamientos, la segunda en la boca, — porque nos libre Dios — de las malas palabras, — la tercera en los pechos, porque nos libre Dios — de los malos deseos, —

Mipopo Sebodu, etc, cnuaco, liée, debocion, nique, thegi, con la Santa Cruz, Lisa, gue, miro; auto, nai, eré que, cu, nao, à loe, maño, nuque, guan, agua, sopito, cañera, nocque, vnagua, dosia, toguaco, acon, Cruces, megue, nuco, Vodu, demitoe, nuñera, nojaco; me veto, eon, Vodu, demitoe, apio, nuñera, aroe, rugi. Vodu, demitoe, yoro, nuñera,

Aa

diziendo assi — Por la señal — de la Santa Cruz — de nuestros enemigos — libra nos Señor — Dios nuestro, — en el nombre del Padre, y del Hijo, — y del Espiritu Santo, — Amen Iesvs. —

erode, cuamos dogaia, de la Santa Cruz; mique, rogue, guremi, toe, Vodu, miro, aico, dac; Vie, y del Espiritu Santo, Amen Iesvs.

EL PADRE NVESTRO DAYGVE, MITO.

PAdre nuestro, — que estas en los Cielos, santificado — sea el tu nombre, — venga a nos — el tu Reyno, — hagase — tu voluntad, — assi en la tierra, — como en el Cielo, — el pan nuestro — de cada dia — danoslo oy Señor, — y perdonanos — nuestras deudas, — assi como nosotros —

DArgue, miro, erepi, evota, agal, santificado, soro, ali, vgaa, miro; à lor come, guanoque, orkique, oumo, ayfague, oumo, agai; oua, miro, vepa, ve, toe, nancie, ayale, gui, marodo, oumo, miu,

de

per-

चित्र 5.6 : डॉक्ट्रिना क्रिस्टा

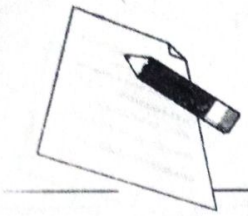

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.1

1. किन्हीं तीन राष्ट्रीय दैनिकों का नाम लिखें।

   i. .....

   ii. .....

   iii. .....

2. मुद्रण कला का आविष्कार किसने किया? छपाई के लिये वे किस वस्तु का प्रयोग करते थे?

3. कब और कहाँ पहला कागज कारखाना स्थापित हुआ?

5.3 पहला समाचारपत्र

विश्व में प्रकाशित पहला समाचारपत्र कौन सा था? किसी एक समाचारपत्र को पहला बताना एक कठिन कार्य है। मौर्यकाल के दौरान राजा एक घोषणा के तौर पर लोगों के बीच समाचार प्रसारित करते थे। प्राचीन रोम में एक्टा डाइअर्ना, या शासकीय उद्घोषणा नियमित रूप से प्रकाशित होता था। इसे धातु या पत्थर पर लिखा जाता था। इसे समाचारपत्र का सबसे प्रारम्भिक रूप कह सकते हैं। चीन में भी शासन 'टिपाओ' नाम के ऐसे ही समाचार पृष्ठ प्रकाशित करता था।

बहुत से शोधकर्ता चीन में प्रकाशित 'पेकिंग गजट' को पहला अखबार मानते हैं। यह 618 में प्रारम्भ हुआ। शुरुआती दौर में यह अखबार हाथ से लिखा जाता था और पाठकों के बीच वितरित किया जाता था। बाद में यह मुद्रित करके प्रसारित किया जाने लगा। बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक 'पेकिंग गजट' छपता रहा।

शासकों द्वारा प्रकाशित न्यूजलेटर समाचारपत्र का पहला रूप था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ऐसे न्यूजलेटर प्रकाशित कराये। समाचारपत्रों के वर्ल्ड एसोसिएशन के मुताबिक आधुनिक अर्थों में पहला अखबार 1605 में जोहान कारलोस ने प्रकाशित किया। समाचारपत्र का नाम थोड़ा बड़ा है 'रिलेशन एलर फर्नेम्मेन अण्ड जेडेंक्वांडिगेन हिस्टोरियेन'। वर्ष 1609 में जर्मनी से एक अन्य अखबार प्रारम्भ हुआ जिसका नाम 'फाइल' था। आधुनिक अवधारणा का एक अन्य अखबार 'द गजट' वेनिस से प्रकाशित हुआ।

परन्तु ऐसे कई प्रारम्भिक समाचारपत्र दीर्घकाल तक प्रकाशित नहीं हो सके। इनमें से कुछ समाचारपत्रों ने शासकों के शासन की आलोचना शुरू कर दी अतः वे इन प्रकाशनों से खुश नहीं थे। अनेक समाचारपत्रों को बन्द होने के लिये बाध्य किया गया। संयुक्त राज्य अमरीका में एक अखबार 'द पब्लिक आकरेंसेस' कुछ दिन ही छप

टिप्पणी

सका। ऐसा ही कुछ यू.के. में जेम्स एशर द्वारा शुरू किये गये 'डेली पेपर' के साथ हुआ।

इसके पश्चात समाचारपत्रों ने अपने रूप और विषयवस्तु में भारी परिवर्तन किये। इंग्लैंड में 1622 में 'द वीकली न्यूज' शुरू हुआ। ऑक्सफर्ड में 1622 में आधुनिक अवधारणा का पहला अखबार शुरू हुआ। यह 'ऑक्सफर्ड गजट' था। लन्दन से प्रकाशित होने वाला पहला अखबार डेली कोरांट था। इसका सम्पादक ई. मैलेट था। जोन वाल्हट ने 1784 में 'डेली यूनिवर्सल रजिस्टर' लंदन से प्रारम्भ किया जिसने कालान्तर में एक नया नाम 'द टाइम्स' अपनाया। यह आज विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समाचारपत्रों में से एक है। संयुक्त राज्य अमरीका में पहला अखबार 'पब्लिक आकरेंटस' था जो 1690 में शुरू हुआ। 1704 में पोस्ट मास्टर जान कैम्पबेल ने एक अन्य समाचारपत्र 'द बोस्टन न्यूजलेटर' प्रारम्भ किया। 1783 में अमरीका में 'पेन्सिलवैनिया इवनिंग पोस्ट' प्रारम्भ हुआ जिसमें आधुनिक समाचारपत्र के सभी लक्षण तथा विषय सम्मिलित थे। कालान्तर में 1851 में 'न्यूयार्क टाइम्स' आया।

क्या आप जानते हैं कि विश्व में सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला समाचारपत्र कौन सा है? यह किस देश में प्रकाशित होता है? सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला अखबार 'योमी यूरी शिम्बून' है जो जापान में प्रकाशित होता है। इसकी प्रसार संख्या 1,45,57,000 प्रति रोजाना है। दुनिया का दूसरा तथा तीसरा सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला अखबार भी जापान से ही प्रकाशित होता है।

गतिविधि 5.1: *विश्व के दूसरे तथा तीसरे सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले दैनिकों का नाम पता करिये। यह भी पता लगाइये कि उनकी कितनी प्रतियाँ बिकती हैं।*

5.4 भारत में समाचारपत्रों का मुद्रण

क्या आप कोलकाता शहर का पुराना नाम जानते हैं? यह कैलकटा था। क्या आप जानते हैं कि कभी कैलकटा भारत की राजधानी था? कैलकटा 1774 से 1922 तक भारत की राजधानी था। भारत के इतिहास में अन्य कई क्षेत्रों में प्रथम स्थान रखने का श्रेय कैलकटा को मिलता है। पहली रेल कम्पनी यहीं शुरू हुई। इसी शहर में भारत की पहली मेट्रो रेल चली। पहला डाक व तार कार्यालय तथा पश्चिमी शैली का पहला बैंक कैलकटा में ही खुला। इसी शहर में सबसे पहले हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने कार्य शुरू किया। आप सभी ने नोबेल पुरस्कार के बारे में सुना होगा। कैलकटा शहर ने देश को पाँच नोबेल पुरस्कार विजेता, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सर सी. वी. रमन, मदर टेरेसा, रोनाल्ड रोज तथा अमर्त्य सेन दिये।

आपको यह जानना दिलचस्प लगेगा कि कैलकटा एक और क्षेत्र में अग्रणी है। यह कैलकटा ही था जहाँ से भारत का पहला समाचारपत्र प्रकाशित हुआ।

एक अंग्रेज ने हमारे देश में पहला अखबार शुरू किया। 29 जनवरी 1780 को जेम्स आगस्टस हिकी ने 'बंगाल गजट' प्रारम्भ किया। इसका दूसरा नाम था 'कैलकटा जनरल एडवरटाइजर'। इसको लोग 'हिकी के गजट' के नाम से जानते थे। पत्र के

टिप्पणी

पहले अंक में मात्र दो पृष्ठ थे जो बाद में बढ़ कर चार पृष्ठ तक हो गया। इसका आकार 35 सेमी. x 24 सेमी. का था।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी प्रेस की स्वतंत्रता को समाज के लिये उचित नहीं समझती थी। उन्होंने समाचारपत्र के प्रकाशन को बंद करने की कोशिश की। हिकी बहुत निडर सम्पादक था। उसने ब्रिटिश अधिकारियों की आलोचना करना जारी रखा। उसने ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारियों पर धावा बोलने वाली रिपोर्ट प्रकाशित कीं। अन्ततः 1782 में उन्होंने उसका पत्र तथा प्रेस जब्त कर लिया और इसका प्रकाशन बन्द करा दिया। हिकी को देश छोड़ कर जाने के लिये कहा गया। उसे वापस इंग्लैंड भेज दिया गया। कोलकता के राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा लंदन के ब्रिटिश म्यूजियम में आज भी 'बंगाल गजट' की प्रतियां सुरक्षित हैं।

समाचारपत्र का जब्त किया जाना अधिकारियों द्वारा की जाने वाली एक विरल कार्रवाई है। यह तब किया जाता है जब पत्र कोई ऐसा समाचार या लेख प्रकाशित करता है जो अत्यधिक आपत्तिजनक समझा जाता है। जब्ती के माध्यम से सरकार के द्वारा प्रेस तथा प्रकाशन की अन्य सामग्री खजाने में जमा कर दी जाती है। उसके बाद पत्र के कार्यालय को मुहरबंद कर के इसका प्रकाशन बंद कर दिया जाता है।

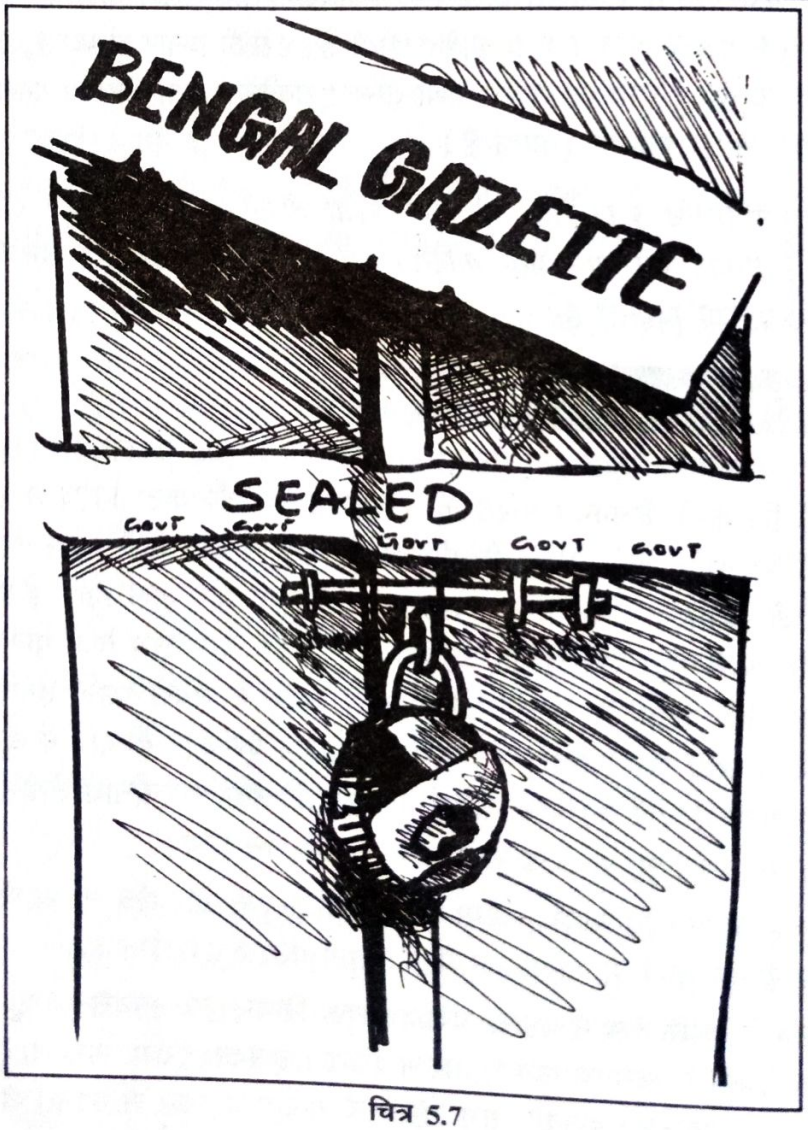

चित्र 5.7

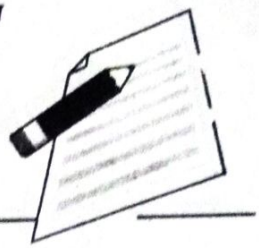

टिप्पणी

इस प्रकार हमने देखा कि भारत के समाचारपत्र प्रकाशन के इतिहास में कोलकाता का एक अनूठा स्थान है। लेकिन यह जानकारी इससे भी दिलचस्प है कि देश का दूसरा, तीसरा और चौथा अखबार भी इसी शहर से शुरू हुआ। 1780 में हिकी के पदचिन्हों पर चलते हुए कैलकटा से दूसरा अखबार 'द इंडियन गजट' निकला। इसके बाद 1784 में 'कैलकटा गजट' तथा 1785 में 'बेंगाल जरनल' शुरू किया गया जो कैलकटा से निकलने वाला तीसरा तथा चौथा अखबार था।

ये सभी प्रारम्भिक पत्र अंग्रेजी में प्रकाशित होते थे। धीरे–धीरे देश के अन्य भागों से भी समाचारपत्र प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। मद्रास से 'मद्रास कोरियर' (1785) तथा 'मद्रास गजट' (1795) शुरू हुआ। मुम्बई से 'मुम्बई हेरल्ड' 1785 में निकला। भारत में अंग्रेजों द्वारा थोपा गया प्रेस रेग्यूलेशन और सेन्सरशिप और अधिक समाचारपत्रों के प्रकाशन में बाधा बन गया। कालान्तर में जब लार्ड हेस्टिंग्स ने 1818 में कठोर सेन्सरशिप हटा कर नरम नीति अपनायी तो अनेक भारतीय भाषा के पत्रों के साथ नये अखबार अस्तित्व में आये। प्रेस की स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के लिये विख्यात राजा राममोहन राय ने एक फारसी भाषा के पत्र 'मिरात–उल–अखबार' का सम्पादन किया।

भारत का पहला भाषाई पत्र कन्नड़ भाषा में निकला जिसका नाम 'कन्नड़ समाचार' था। इसके प्रकाशक भारतीय नहीं बल्कि विदेशी धर्मप्रचारक थे। एक भारतीय द्वारा प्रकाशित पहला भारतीय भाषा का पत्र भी कैलकटा से ही 1816 में शुरू हुआ। यह गंगाधर भट्टाचार्जी का 'द बेंगाल गजट' था।

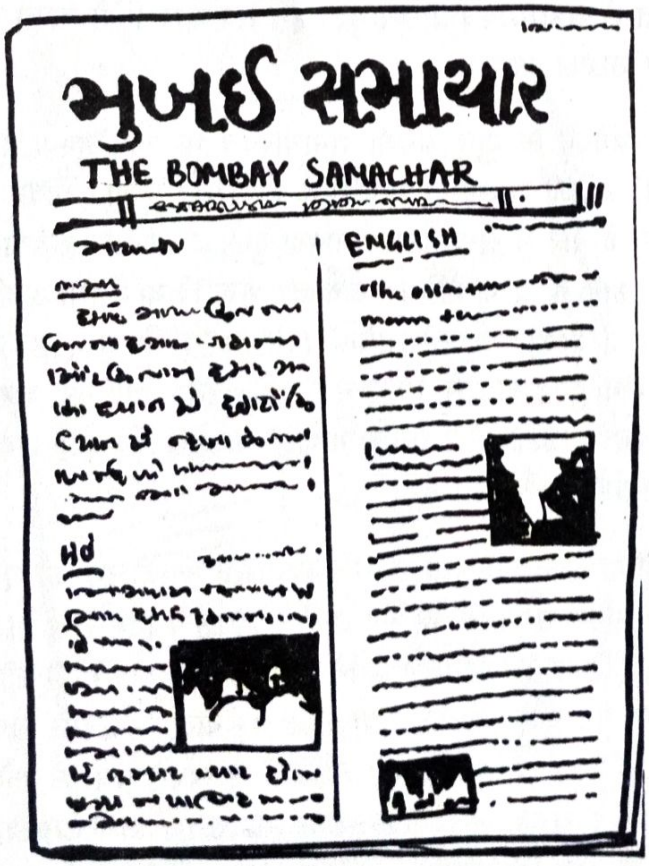

चित्र 5.8: मुम्बई समाचार

टिप्पणी

मुम्बई से आज भी प्रकाशित गुजराती दैनिक 'मुम्बई समाचार' भारत ही नहीं बल्कि एशिया का सबसे पुराना अखबार है। इसकी स्थापना 1822 में की गयी थी।

क्रियाकलाप 5.2 अपने राज्य के पाँच प्रारम्भिक समाचारपत्रों के नाम प्रकाशन प्रारम्भ होने के वर्ष के साथ एकत्र करो।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. संयुक्त राज्य अमरीका तथा यू.के. के प्रारम्भिक समाचारपत्र कौन से थे?
2. भारत के समाचारपत्र के इतिहास में कोलकाता शहर का क्या महत्व है?
3. 'बेंगाल गजट' कब शुरू हुआ? इसको किस अन्य नाम से जाता जाता था?

5.5 सांस्कृतिक पुनर्जागरण और स्वतंत्रता आन्दोलन

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक अनेक समाज सुधारकों ने सक्रिय रूप से भारतीय समाज में मूलभूत परिवर्तन लाने का अभियान चलाया। हिन्दुत्व में सुधार, सती प्रथा उन्मूलन के लिये उठाये गये कदम तथा विधवा पुनर्विवाह के प्रोत्साहन के लिये किये गये प्रयास कुछ प्रमुख सुधार थे। इन महान नेताओं से प्रेरित होकर देश के अनेक हिस्सों से बहुत से समाचारपत्र प्रारम्भ हुए। इन सब कारणों से भारत के समाचारपत्र उद्योग में एक उछाल आया।

इसी समय में अंग्रेजी के कुछ अग्रणी समाचारपत्र भी शुरू हुए। 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' (1861) अंग्रेजी शासन के समर्थन के साथ शुरू हुआ। आपमें से बहुत लोगों ने 'जंगल बुक' के बारे में सुना होगा। 'जंगल बुक' के लेखक रुडयार्ड किपलिंग ने इलाहाबाद से 1866 में 'द पायोनियर' अखबार शुरू किया। इसी अवधि में 'द अमृत बाजार पत्रिका' (1868), 'द स्टेट्समैन' (1875) 'द हिन्दू' (1887), 'द ट्रिब्यून' (1880) भी प्रारम्भ हुए। बाद में 1923 में 'द हिन्दुस्तान टाइम्स' शुरू किया गया। 'मलयाला मनोरमा' (1888) जैसे क्षेत्रीय भाषाओं के कुछ पत्र इसी अवधि में शुरू हुए जो आज भी अग्रणी माने जाते हैं।

जब महात्मा गाँधी भारत लौटे तो उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नया आवेग दिया। वह एक महान सम्पादक भी थे। उन्होंने 1918 में होम रूल पार्टी द्वारा प्रारम्भ साप्ताहिक 'यंग इंडिया' का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। गाँधी जी ने 'नवजीवन' नामक एक अन्य गुजराती साप्ताहिक शुरू किया। बाद में उन्होंने महादेव देसाई के संपादकत्व में 'हरिजन' प्रारम्भ किया। गाँधीजी ने अपने पत्रों में कोई विज्ञापन न प्रकाशित करने पर सदैव जोर दिया। फिर भी उनके सभी प्रकाशनों की प्रसार संख्या पाठकों के बीच विस्तृत थी।

टिप्पणी

चित्र 5.9

चित्र 5.10

टिप्पणी

चित्र 5.11

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि भारत में कितने समाचारपत्र प्रकाशन के 100 वर्ष पार कर गये हैं तथा अब भी प्रसार में हैं? देश में ऐसे 41 पत्र हैं जो शताब्दी समाचारपत्र कहे जाते हैं। अंग्रेजी दैनिकों में कुल चार अखबारों ने यह रेखा पार कर ली हैः द टाइम्स ऑफ इंडिया, द हिन्दू, द ट्रिब्यून तथा द स्टेट्समैन। भाषाई अखबारों में मुम्बई समाचार, मलयाला मनोरमा और दीपिका भी शताब्दी पत्र हैं। पाठ 9 में आप भाषाई समाचारपत्रों के विषय में विस्तार से जानेंगे।

5.6 आधुनिक तकनीकी का आगमन

क्या आपने कभी सोचा है कि समाचारपत्रों के पृष्ठ कैसे छपते हैं? लकड़ी के ठप्पे द्वारा मुद्रण के दिनों से आज तक समाचारपत्रों ने एक लम्बी यात्रा तय की है। तकनीकी क्रांति ने मुद्रित माध्यम में क्रांति ला दी है। दीर्घकाल तक इनकी छपाई हाथ की कम्पोजिंग से होती थी। कालान्तर में इसका स्थान मोनोटाइप व लिनोटाइप ने ले लिया। इस प्रक्रिया में एक कुंजी पटल द्वारा संचालित यंत्र अक्षरों की कम्पोजिंग किया करता था। आज यह भी अप्रचलित हो चुके हैं। इसका स्थान कम्प्यूटर टाइप सेटिंग, ऑफसेट प्रिंटिंग और लेजर प्रिंटिंग ने ले लिया है। डेस्क टॉप पब्लिशिंग अब एक अत्यन्त प्रचलित मुद्रण की प्रक्रिया बन गयी है।

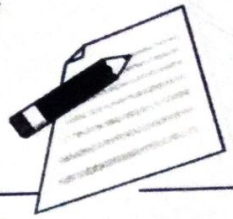

LINOTYPE

ABCDEabcde12345$€@&ABCDEabcde12345$€@&ABCDEabcde12345$€

MONOTYPE

ABCDEabcde12345$€@&ABCDEabcde12345$€@&ABCDEabcde12345$€@&A

चित्र 5.12: मोनोटाइप, लिनोटाइप

प्रारम्भिक दिनों में समाचारपत्र श्वेत–श्याम ही छपते थे। उस समय रंगीन छपाई सम्भव नहीं थी। परन्तु अब लगभग सभी समाचारपत्र रंगीन पृष्ठ छापते हैं। कुछ पत्र केवल परिशिष्ट तथा विशेष पृष्ठ ही रंगीन छापते हैं। रंगीन छपाई से पृष्ठ अधिक चटख तथा आकर्षक बन गये हैं।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. भारत में 19 वीं सदी के अन्त में प्रारम्भ हुए तीन अंग्रेजी समाचारपत्रों के नाम बताइये।
2. भारत का कौन सा सर्वाधिक पुराना समाचारपत्र है जो आज भी प्रकाशित होता है?
3. गाँधीजी द्वारा शुरू किये गये दो प्रकाशनों के नाम बताइये।

5.7 समाचारपत्र का आकार

आपने देखा होगा कि सभी समाचारपत्रों का आकार एक जैसा नहीं होता, कुछ बड़े होते हैं, कुछ छोटे तथा कुछ बहुत छोटे। आकार के आधार पर समाचारपत्रों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। ये ब्रॉडशीट, टेबलॉयड तथा बर्लिनर या मिडीज हैं। प्रातःकालीन समाचारपत्र सामान्यतः ब्रॉडशीट ही होते हैं। ये आकार में बड़े होते हैं। भारत में सभी प्रमुख समाचारपत्र ब्रॉडशीट ही हैं। उदाहरणार्थ 'द टाइम्स ऑफ इंडिया', तथा 'द हिन्दुस्तान टाइम्स'। टेबलॉयड पत्र ब्रॉडशीट के आधे आकार के होते हैं। भारत में अधिकांश सांध्यकालीन पत्र टेबलॉयड हैं। उदाहरणार्थ 'मिड–डे' तथा 'मेट्रोनाऊ'। वर्तमान में कुछ नये प्रातःकालीन पत्रों ने भी टेबलॉयड फार्मेट अपनाया है।

चित्र 5.13 ब्रॉडशीट

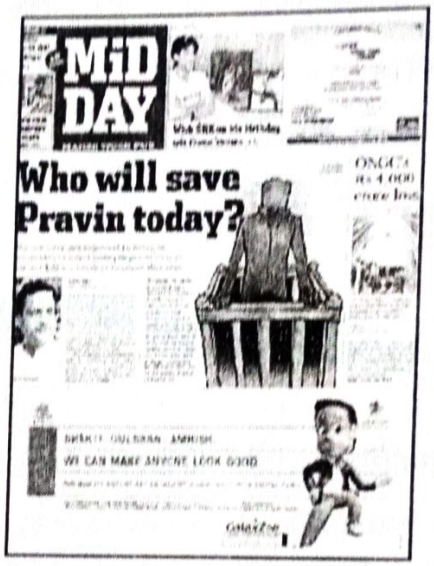

चित्र 5.14 टैब्लायड

बर्लिनर या मिडी बहुत छोटे आकार के पत्र होते हैं। कुछ यूरोपीय पत्र जैसे ला मांदे और ला स्टाम्पा मिडीज हैं। "मिंट" भारत में प्रकाशित एक बर्लिनर का नाम है। भारत में कुछ पत्रिकाएँ इसी फार्मेट में विशेष पुस्तिकाएँ छापती हैं।

क्या अब आप उस समाचारपत्र का आकार बता सकते हैं जो आप प्रतिदिन पढ़ते हैं? यह ब्रॉडशीट है या टेबलॉयड?

5.8 इंटरनेट समाचारपत्र तथा संस्करण

क्या आपने एक इंटरनेट कैफे देखा है? आजकल इंटरनेट कैफे उतने ही आम हो गये हैं जितना आई.एस.डी./एस.टी.डी. बूथ। यदि आप अब तक इंटरनेट कैफे में नहीं गये हैं तो जाइये और देखिये वहाँ क्या होता है।

इंटरनेट एक विश्वव्यापी कम्प्यूटर आधारित एक–दूसरे से जुड़ा हुआ नेटवर्क है। इसमें देशों की कोई सीमा नहीं होती। अतः कम्प्यूटर नेटवर्क के माध्यम से भारत में बैठा

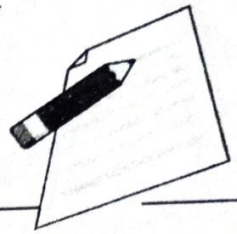

व्यक्ति यू.एस.ए की इंटरनेट साइट तक पहुँच सकता है। इससे विश्वभर के संचार में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया है।

हाल तक लगभग सभी प्रमुख समाचारपत्रों के इंटरनेट संस्करण आ गये हैं। उदाहरण के लिये, द हिन्दुस्तान टाइम्स या इंडियन एक्सप्रेस या टाइम्स ऑफ इंडिया को उनके नेट संस्करण के माध्यम से इंटरनेट पर पढ़ा जा सकता है। प्रत्येक पत्र का उनकी साइट के लिये एक डॉटकाम नाम होता है जैसे www. timesofindia.com. । आप समाचारपत्र खरीदने के लिये भुगतान करते हैं जबकि समाचारपत्र का इंटरनेट संस्करण निःशुल्क होता है तथा यदि आपके पास एक कम्प्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन है तो इस तक पहुँचा जा सकता है।

क्रियाकलाप 5.3 *समाचारपत्रों के पाँच इंटरनेट संस्करण का नाम एकत्र करिये।*

कुछ समाचारपत्र केवल इंटरनेट पर प्रकाशित होते हैं। इन्हें वेब समाचारपत्र कहते हैं। इंटरनेट पत्र की एक सुविधा यह है कि ये विश्वभर में उपलब्ध हैं।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. पाँच ब्रॉडशीट समाचारपत्रों के नाम लिखिये।

2. तीन टेबलॉयड समाचारपत्रों के नाम बताइये।

3. तीन इंटरनेट समाचारपत्र साइट बताइये।

5.9 मुद्रित माध्यमों के अन्य प्रकार

फिल्म फेयर, चंपक, गृहशोभा, चन्दामामा, इंडिया टुडे, द वीक, आउटलुक। क्या आप इन नामों से परिचित हैं? ये मुद्रित माध्यम के ही अंग हैं। परन्तु ये समाचारपत्र नहीं हैं। इन्हें पत्रिका कहते हैं। क्या आप समाचारपत्र तथा पत्रिका के बीच अन्तर स्पष्ट कर सकते हैं?

समाचारपत्रों के समान ही पत्रिकाएँ तथा साप्ताहिक मुद्रित माध्यम के अन्य प्रकार हैं। ये एक नियमित कालावधि में प्रकाशित होते हैं। आप इनके बीच विभेद कैसे करेंगे? एक साप्ताहिक सप्ताह में एक दिन प्रकाशित होता है तथा एक मासिक माह में एक दिन। एक पाक्षिक दो सप्ताह में प्रकाशित होता है। एक द्विसाप्ताहिक प्रत्येक सप्ताह में दो बार प्रकाशित होता है। एक त्रैमासिक हर तीसरे महीने प्रकाशित होता है। इन्हें क्वार्टरली भी कहते हैं। इसके साथ कई ऐसे प्रकाशन हैं जो वर्ष में एक बार आते हैं, इन्हें वार्षिक कहते हैं।

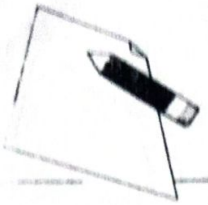

टिप्पणी

'इंडिया टुडे' एक साप्ताहिक है जबकि 'चम्पक' पाक्षिक है। 'गृहशोभा' तथा 'वनिता' मासिक है।

चित्र 5.15 पत्रिकाएँ

5.10 मुद्रित माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में अन्तर:

करीब छः शताब्दी पूर्व मुद्रण के आगमन के बाद मुद्रित माध्यम जनसंचार का एकमात्र रूप था। इसके बाद इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आये। यद्यपि मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक दोनों माध्यम जनसंचार से ही सम्बन्ध रखते हैं, तथापि इनके बीच कुछ आधारभूत अन्तर हैं:–

मुद्रित माध्यम	इलेक्ट्रॉनिक माध्यम
1. साक्षरता मुद्रण की आधारभूत आवश्यकता है। केवल साक्षर व्यक्ति ही इसे पढ़ सकता है।	निरक्षर व्यक्ति भी एक समाचार बुलेटिन देख सकता है और उसके विषयवस्तु को ग्रहण कर सकता है यद्यपि स्क्रीन पर लिखी गयी सामग्री वह नहीं पढ़ सकता।
2. यह माध्यम एक डेडलाइन के मुताबिक कार्य करता है। सामान्यतः एक प्रातः कालीन पत्र छपने से पहले के दिन की मध्यरात्रि तक के समाचार लेता है।	इसमें कोई डेडलाइन नहीं होती। समाचार को किसी भी वक्त अपडेट किया जा सकता है।

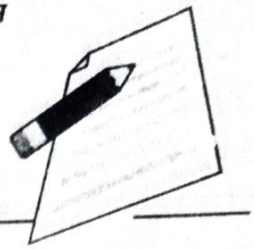

3.	मुद्रित माध्यम में पाठक पीछे वापस जा सकता है तथा पुनः जाँच कर सकता है। जो वह पहले पढ़ चुका है।	दर्शक वापस जा कर उसकी पुनः जाँच नहीं कर सकते जो उन्होंने स्क्रीन पर देखा है।
4.	मुद्रित माध्यम घटनाओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता है।	लम्बे गहन विश्लेषण की संभावना यहाँ नहीं होती।
5.	सीधे सजीव, प्रसारण में चर्चा की संभावना इसमें नहीं होती।	सीधी सजीव चर्चा संभव है।
6.	भाषा अधिक साहित्यिक, अलंकारिक और पाठक के लिये उपयुक्त होती है।	बोली गयी भाषा दर्शक हेतु उपयुक्त होती है।
7.	समाचारों का बार–बार अपडेट करना संभव नहीं।	मिनट से मिनट तक का अपडेट संभव है।

5.11 सर्वाधिक प्रसारित दैनिक

भारत में सजीव तथा सक्रिय मुद्रण माध्यम का अस्तित्व है। भारत को विस्तृत क्षेत्र, सांस्कृतिक विभिन्नता तथा भाषा की बहुलता के लिये जाना जाता है जो बोली तथा लिखी जाती हैं। भारत में 28 राज्य हैं तथा 7 केन्द्रशासित प्रदेश हैं। जब भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ तब मात्र 35, 33 समाचारपत्र तथा प्रकाशक थे। उनमें से 330 समाचारपत्र थे और 3203 अन्य प्रकाशन थे। 50 वर्ष बाद 1997 में इनकी संख्या 12 गुनी बढ़ गयी। हर साल लगभग सभी भाषाओं में नये प्रकाशन प्रारम्भ हो रहे हैं परिणामस्वरूप समाचारपत्रों, पत्रिकाओं तथा साप्ताहिकों का देश भर की सभी भाषाओं में वृद्धि हो रही है। 31, मार्च 2006 तक भारत में 62550 प्रकाशक थे। इनमें 2130 समाचारपत्र 2428 साप्ताहिक तथा 1471 मासिक तथा शेष अन्य प्रकार के प्रकाशक थे। फिर भी समाचारपत्रों की प्रसार संख्या साल दर साल बदलती रहती है। यद्यपि कुछ भाषाओं के समाचारपत्र सालों तक सर्वाधिक प्रसार संख्या के पत्र का स्थान बनाये रखते हैं, तथापि यह सभी राज्यों तथा भाषाओं में संभव नहीं है। अतः यदि किसी वर्ष विशेष की प्रसार स्थिति यहाँ दी जा रही है, तो यह अगले वर्ष में परिवर्तित भी हो सकती है।

आपको ताजा प्रसार संख्या जानने की उत्सुकता होगी। इसके लिये आप निम्नलिखित वेबसाइटों पर जा सकते हैं–

भारत के समाचार पत्र पंजीयक (आर.एन.आई.) http//rni.nic.in ऑडिट ब्यूरो ऑफ

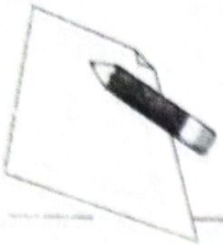

टिप्पणी

सर्कुलेशन (ए.बी.सी.) www.abc.org। आप पाठ 8 में समाचारपत्रों के प्रसार के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

पाठगत प्रश्न 5.5

1. अपने देश से प्रकाशित पाँच साप्ताहिकों का नाम दीजिये।
2. अपने देश से प्रकाशित दो मासिकों का नाम दीजिये।
3. अपने देश से प्रकाशित दो पाक्षिकों का नाम लिखिये।

5.12 आपने क्या सीखा

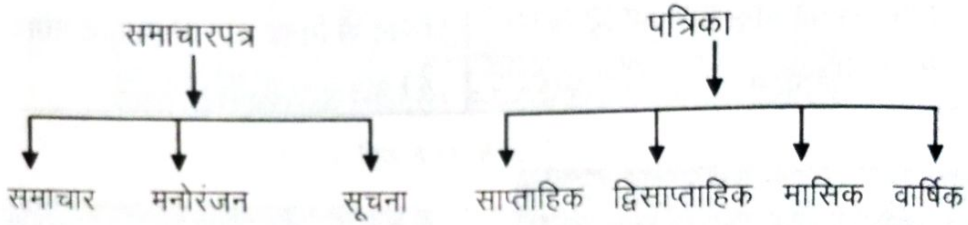

- मुद्रण का इतिहास
- भारत में समाचार का मुद्रण
- समाचार पत्र के आकार — ब्रॉडशीट, टेबलॉयड, बर्लिनर
- सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा स्वतंत्रता आंदोलन
- आधुनिक तकनीकी — डेस्कटॉप प्रकाशन, रंगीन मुद्रण
- इंटरनेट पत्र तथा संस्करण
- भारत के सर्वाधिक प्रसार वाले दैनिक
- मुद्रण तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में अन्तर

5.13 पाठान्त प्रश्न

1. विश्व में प्रारम्भिक समाचारपत्रों का विस्तृत वर्णन कीजिये।

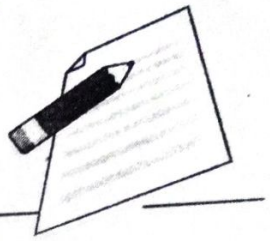

टिप्पणी

2. भारत में समाचारपत्र मुद्रण के प्रारम्भिक इतिहास का वर्णन कीजिये।

3. स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तथा उसके पश्चात भारत में मुद्रित माध्यम के विकास का विवरण दीजिये।

4. इंटरनेट पत्रों का विवरण दीजिये तथा इनके लाभ बताइये।

5. मुद्रित माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के बीच क्या अन्तर है?

5.14 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 1 (i) टाइम्स ऑफ इंडिया (ii) हिन्दुस्तान टाइम्स (iii) इंडियन एक्सप्रेस (iv) कोई अन्य अखबार जो आप सोच सकते हैं।

2. मुद्रण कला का अविष्कार करने वाले प्रथम चीनी थे। वे अक्षर छापने के लिये लकड़ी के ठप्पे का इस्तेमाल करते थे।

3. यूरोप में 1120 में पहला कागज कारखाना स्थापित हुआ।

5.2. 1. यू.एस.ए. में 'द पब्लिक आकरेंसेज़' तथा यू. के में 'द वीकली न्यूज'

2. भाग 5.5 देखें

3. यह 29 जनवरी 1780 को कैलकटा से शुरू हुआ। इसे लोग 'हिकीज़ गजट' के नाम से जानते थे।

5.3 1. (i) द टाइम्स ऑफ इंडिया (ii) द पायोनियर (iii) द स्टेटसमैन (iv) कोई अन्य अखबार जो आप सोच सकते हैं।

2. मुम्बई से प्रकाशित गुजराती दैनिक 'मुम्बई समाचार'

3. 'नवजीवन' और 'हरिजन'

5.4. 1. (i) टाइम्स आफ इंडिया (ii) हिन्दुस्तान टाइम्स (iii) इंडियन एक्सप्रेस (iv) द हिन्दू (v) द पायोनियर (vi) कोई अन्य अखबार

2. (i) द मेल टुडे (ii) द मिंट (iii) द सन (iv) कोई अन्य

3. (i) www.times of india.com

(ii) www. The hindu.com

(iii) www.hindustantimes.com

(iv) कोई अन्य

5.5 1 (i) इंडिया टुडे (ii) द वीक (iii) आउटलुक (iv) टाइम्स (v) न्यूजवीक (vi) कोई अन्य

2. (i) रीडर्स डाइजेस्ट (ii) फिल्मफेयर (iii) अन्य

3. (i) फ्रंटलाइन (ii) बिजनेस टुडे (iii) अन्य